जूनटीन्थ

जून 19, 1865

जब गुलामी खत्म हुई!

ड्रू नेल्सन, चित्र: मार्क

जूनटीन्थ

जून 19, 1865

जब गुलामी खत्म हुई!

जयंती!

यह 19 जून, 1865, टेक्सास में एक गर्म दिन है.

बादलों ने चमकीले नीले आकाश को सजाया है.

गैल्वेस्टन शहर के बाहर एक खेत में, एक आदमी मकई की जुताई करता है.

पांच मील दूर, एक किशोर लड़का, लकड़ी काटता है.

पास में ही एक महिला फर्श की सफाई करती है.

उसकी बहन खलिहान में गाय दुहती है.

वो एक सामान्य दिन की तरह ही लगता है.
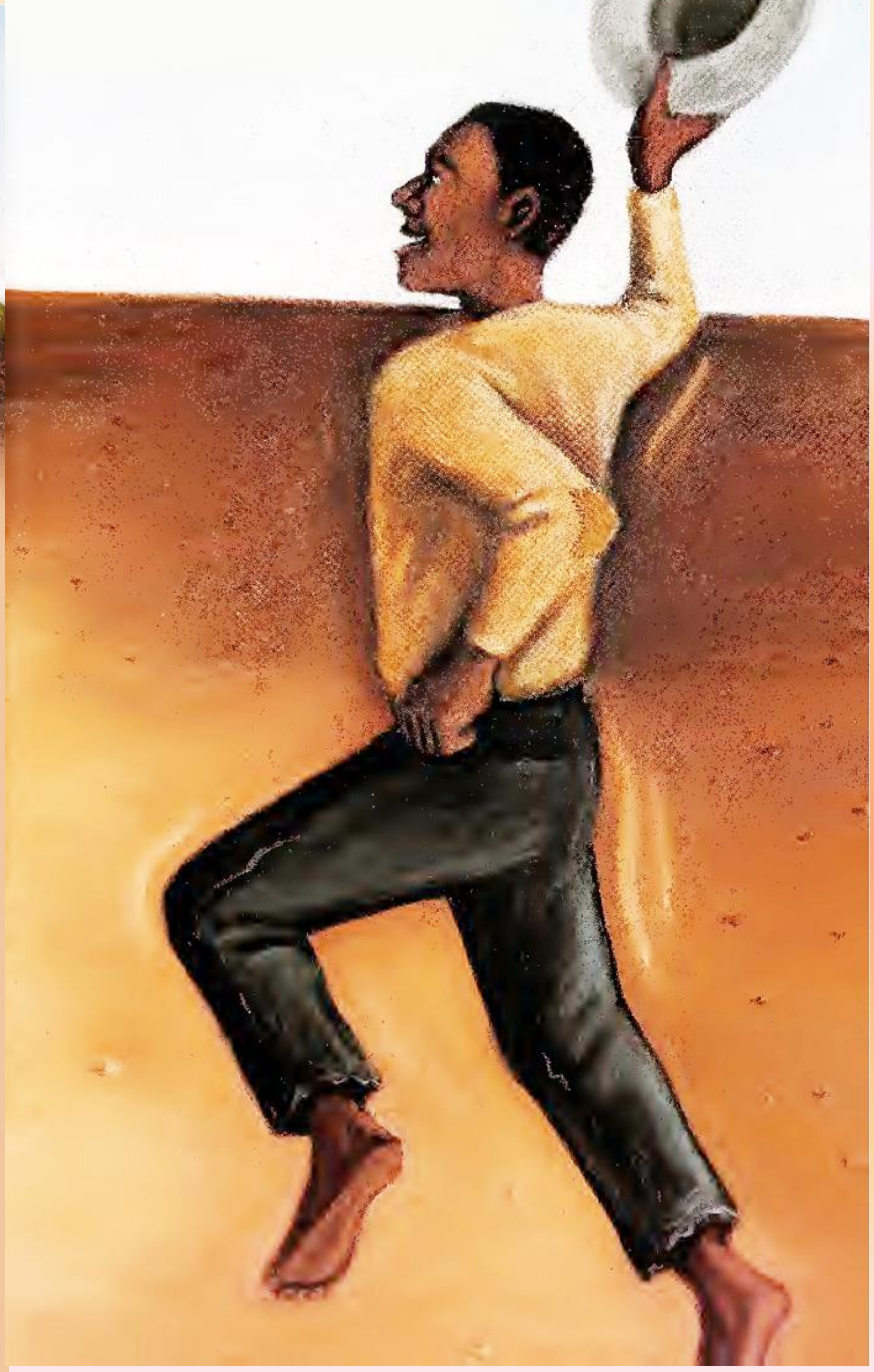
फिर गैल्वेस्टन शहर में एक संदेश आता है.

वो संदेश शहर से होकर एक कान से दूसरे कान तक पहुँचता है.

संदेश, घुड़सवारों द्वारा ग्रामीण इलाकों में ले जाया जाता है.

उसे वैगन और पैदल लोग दूर-दराज़ ले जाते हैं.

लोग इसलिए दौड़ रहे हैं क्योंकि वो संदेश इतना महत्वपूर्ण है.

जब खबर मकई के खेत वाले मज़दूर तक पहुँचती है, तो उसके गाल आंसुओं से भीग जाते हैं.

पांच मील दूर, युवा लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी एक ठूंठ में गाढ़ देता है और फिर वो अपने पिता से गले मिलने के लिए दौड़ता है.

पास में, महिला फर्श रगड़ना करना बंद कर देती है और गीले फर्श पर ख़ुशी से नाचती है.

उसकी बहन दूध की बाल्टी गिरा देती है और अपने घुटनों के बल गिर जाती है.

जैसे ही यह खबर पूरे टेक्सस में फैलती है, लोग काम करना बंद कर देते हैं और खुशी से झूम उठते हैं.

ये पुरुष, महिलाएं और बच्चे सामान्य मज़दूर नहीं थे.

वे काले गुलाम थे.

19 जून को मिली खबर ने, उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल दी.

उस दिन, जनरल गॉर्डन ग्रेंजर, गैल्वेस्टन पहुंचे.

उन्होंने राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का एक आदेश पढ़ा.

आदेश में कहा गया कि अब गुलाम स्वतंत्र थे.
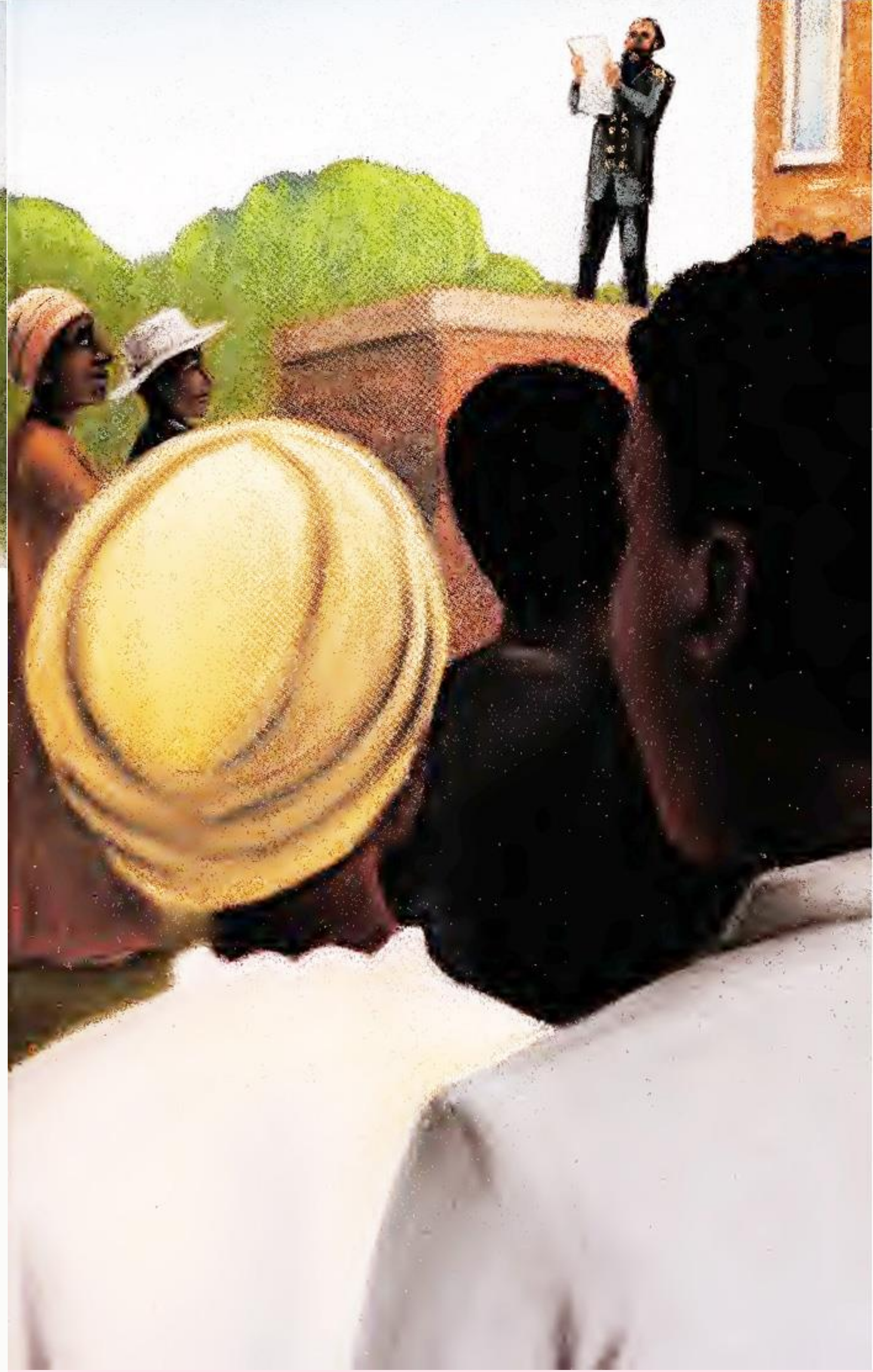
यह अच्छी खबर थी, लेकिन वो एक पुरानी खबर थी.

राष्ट्रपति लिंकन ने 1863 में आदेश दिया था.

लेकिन कुछ जगहों पर दासों को वो आदेश तुरंत नहीं बताया गया.

इस आदेश को टेक्सस के गुलामों तक पहुंचने में दो साल से ज्यादा का समय लगा.

अंत में जब लोगों ने आदेश सुना तो गैल्वेस्टन की सड़कें ख़ुशी की अश्वेत आवाजों से गूँज उठीं.

"अब हम आज़ाद हैं! अब हम मुक्त हैं!"
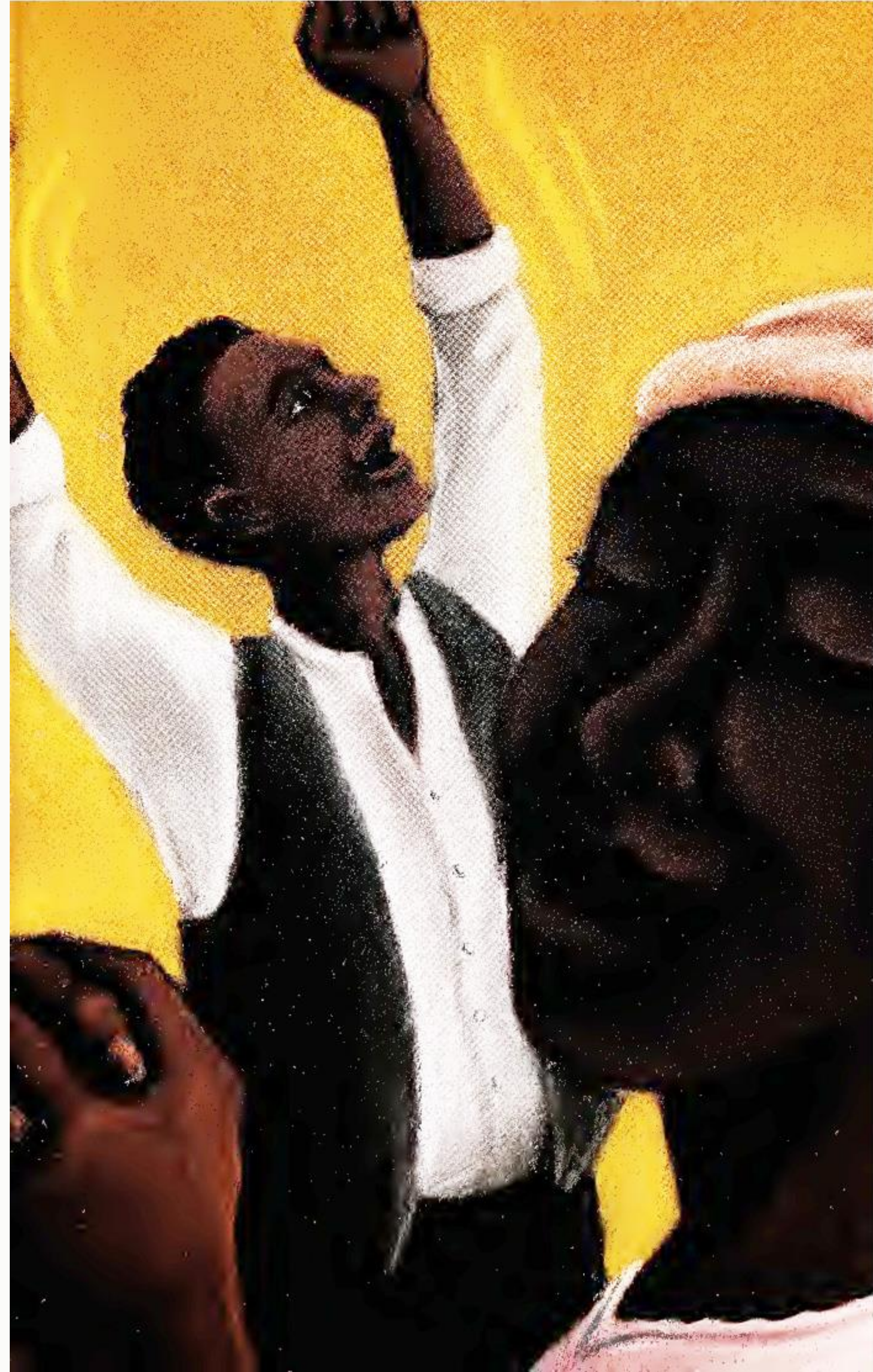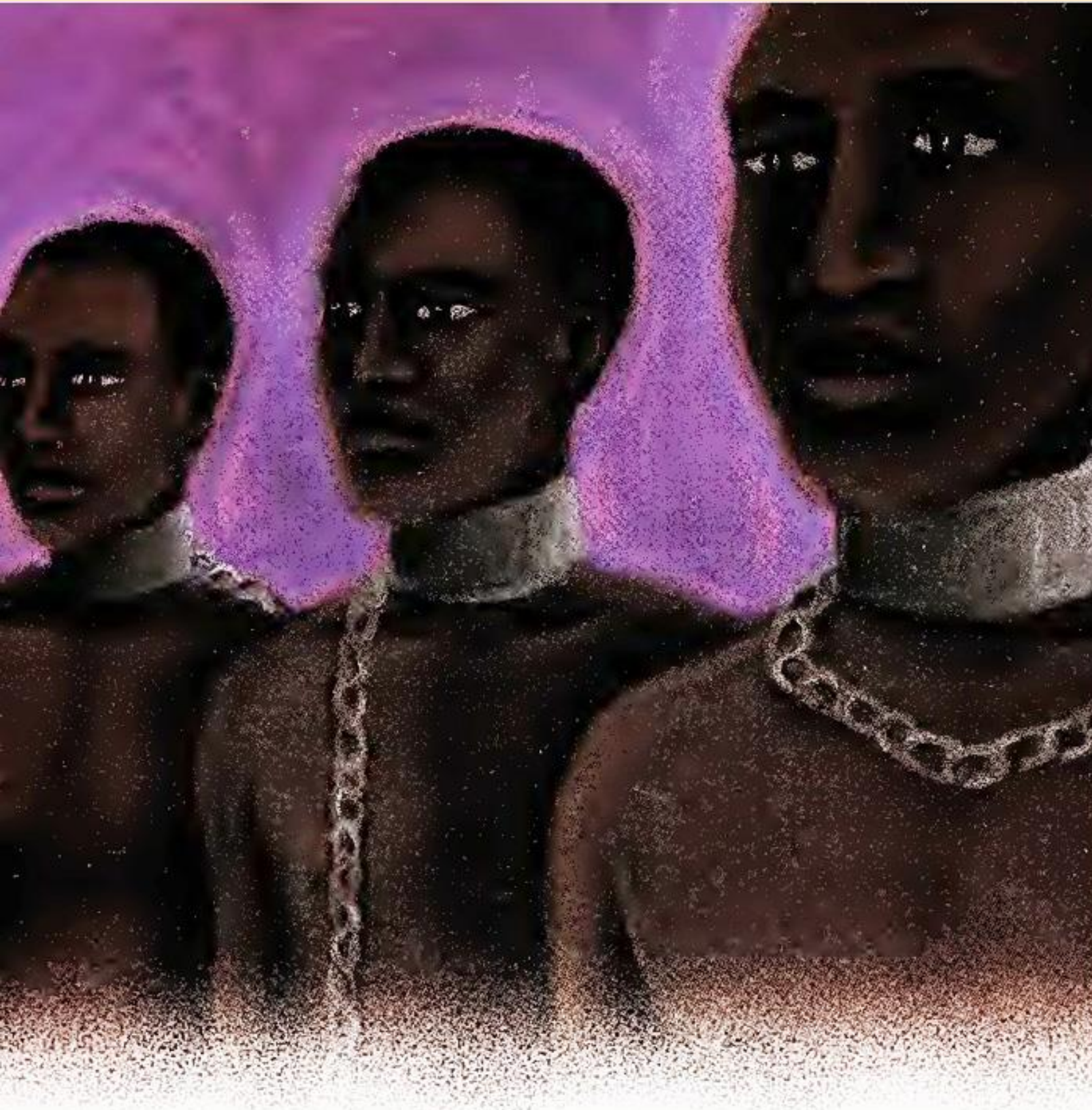
गुलामी

लेकिन काले लोग, गुलाम कैसे बने?

कल्पना करें कि आप बाहर खेल रहे हैं.

अचानक आप किसी जानवर की तरह एक शिकारी के जाल में फंस जाते हैं.

फिर आपको एक जहाज के तहखाने में कई अन्य चुराए गए लोगों के साथ ठूंस दिया जाता है.

और आपको किसी दूर-दराज़ के दूसरे देश में ले जाया जाता है.

आपको "नीलामी ब्लॉक" नाम के मंच पर नंगे खड़े होने को मजबूर किया जाता है.

कोई आदमी आपकी बोली लगाता है और वो आपको खरीदता है.

वो अब आपका मालिक है.

अब से आप उसके गुलाम हैं .

आपको अब उसका कहा करना होगा और अब वो जो चाहे वो आपसे करवा सकता है.

वो आपसे काम करवा सकता है.

वो आपको जंजीरों में बाँध सकता है.

वो आपको कोड़े मार सकता है. वो आपको जान से भी मार सकता है.

आप फिर कभी भी अपने घर या परिवार को नहीं देख पाएंगे.

1619 से शुरू होकर ये बात लाखों अफ्रीकी लोगों के साथ घटी.

उन्हें उत्तरी अमेरिका और अन्य स्थानों पर गुलामों के रूप में ले जाया गया.

अमेरिका के लोग, गुलाम क्यों चाहते थे?

उत्तरी अमेरिका में कुछ लोग घरेलू नौकर और अपने खेतों के लिए मज़दूर चाहते थे.

कई दक्षिणी अमेरिका के लोगों को, अपने प्लांटेशन्स (वृक्षारोपण) पर काम करने के लिए मज़दूरों की ज़रुरत थी.

कपास, तंबाकू, मक्का और अन्य फसलों के वहां विशाल प्लांटेशन्स (वृक्षारोपण) थे.

बागान मालिक, पैसा कमाने के लिए उन फसलों को बेचते थे.

मालिक अपनी कमाई को बहुत बढ़ा सकते थे यदि उन्हें अपने मज़दूरों को वेतन नहीं देना पड़ता.

प्लांटेशन्स (वृक्षारोपण) के मालिक अपने गुलामों को वेतन नहीं देते थे.

युद्ध, 1861-1865

हर किसी को गुलामी पसंद नहीं थी.

उत्तर में बहुत से लोग और दक्षिण में कुछ लोग, गुलामों को मुक्त करना चाहते थे.

उन्हें गुलामी प्रथा गलत लगती थी, और वे इसके खिलाफ अपनी आवाज़ भी उठाते थे.

वे सभी लोगों को एक-समान, मानते थे.
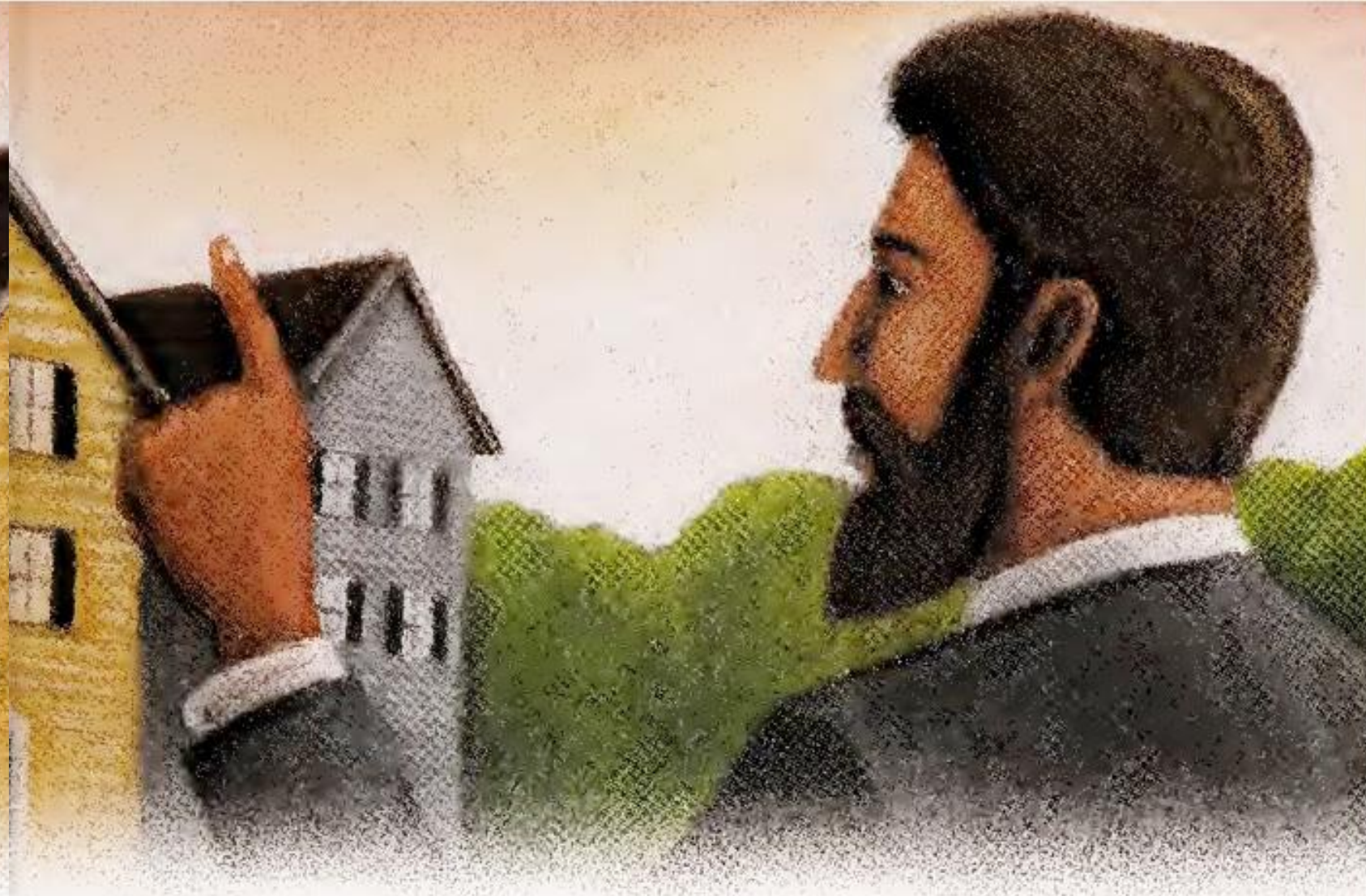
पर अधिकांश दक्षिणवासी, गुलामी को ख़त्म नहीं करना चाहते थे.

दासों के बिना, उनकी फसल कौन बीनता और लकड़ी कौन काटता?

उनका खाना कौन पकाता और उनके घरों को कौन साफ करता?

साथ ही, कई गोरे लोगों का ऐसा भी मानना था, कि वे अश्वेत लोगों से बेहतर थे.

वो अश्वेत लोगों को अपने समान नहीं मानते थे, इसलिए उनके अनुसार वे दास, स्वतंत्र होने के योग्य नहीं थे.

उत्तरी नेताओं ने हार नहीं मानी, और दक्षिणी राज्य भी टस-से-मस नहीं हुए.

अंत में, दक्षिणी राज्यों के एक समूह ने फैसला किया कि वे अब संयुक्त राज्य का हिस्सा बने नहीं रहेंगे.

वे अमरीका से अलग हुए और उन्होंने अमेरिका के संघीय-राज्यों (कॉन्फेडरेट-स्टेट्स) का गठन किया.

अब देश दो भागों में बँट गया, दक्षिण में कॉन्फेडरेट और उत्तर में यूनियन.

12 अप्रैल, 1861 को दोनों पक्षों की सेनाओं की आपस में लड़ाई शुरू हुई.

यह गृहयुद्ध की शुरुआत थी.

आज़ादी

1 जनवरी, 1863 को, राष्ट्रपति लिंकन ने "मुक्ति उद्घोषणा" (एमैनसीपेशन प्रोक्लामेशन) नामक एक विशेष आदेश पर हस्ताक्षर किए.

इस मुक्ति पत्र के अनुसार - संघीय (कॉन्फेडरेट) राज्यों में दास "अब हमेशा के लिए स्वतंत्र" थे.

पर कई बागान मालिकों ने अपने गुलामों को राष्ट्रपति लिंकन के आदेश के बारे में नहीं बताया.

वे चाहते थे कि गुलाम उनका काम करते रहें.

जब मालिकों को पता था कि दक्षिण युद्ध हार जाएगा, फिर भी वे अपने लालच में एक और मुफ्त फसल चाहते थे.

लेकिन जैसे ही उत्तर के यूनियन सैनिक दक्षिण में गए उन्होंने वहां के गुलामों को यह खबर बताई.

उसके बाद दक्षिण के दासों ने, अन्य गुलामों के बीच यह खबर फैलाई.

युद्ध जीतने में मदद करने के लिए हजारों मुक्त दास, उत्तरी यूनियन की सेना में शामिल हो गए.

कुछ टेक्सस गुलामों ने, स्वतंत्रता के बारे में कहानियां सुनीं, लेकिन वे उनकी सच्चाई की पुष्टि नहीं कर पाए.

दासों को सावधान रहना था.

अगर वे आजादी का एक शब्द भी बोलते, तो उनके मालिक उन्हें सजा दे सकते थे.

बागानों से भागने की कोशिश करने वाले दासों की जमकर पिटाई होती या उन्हें जान से मार दिया जाता.

वे केवल प्रतीक्षा और आशा ही कर सकते थे.

अंत में, अप्रैल 1865 में, उत्तरी यूनियन ने गृहयुद्ध जीत लिया.

इस युद्ध में उत्तर और दक्षिण के 700,000 से अधिक लोग लड़ाई में मारे गए.

19 जून को यूनियन के जनरल ग्रेंजर स्वतंत्रता की खबर लेकर गैल्वेस्टन पहुंचे.

टेक्सस वो आखिरी राज्य था, जहां यह आधिकारिक घोषणा सुनाई गई.

अब गुलाम नहीं

सभी ने घोषणा पर विश्वास नहीं किया.

अफ्रीकियों को पहली बार गुलामों जैसे पकड़कर उत्तरी अमेरिका में लाए हुए अब 200 साल से अधिक समय बीत चुका था.

1865 तक, उत्तरी अमेरिका में सबसे अधिक गुलाम वो लोग थे, जो अमेरिका में ही पैदा हुए थे.

वे केवल गुलामी की बेबस ज़िंदगी ही जानते थे.

पर फिर, एक पल में, वे आज़ाद हो गए!

फिर जब दासों को सच्चाई का पता चला, तब उन्होंने अपने मालिकों के लिए काम करना बंद कर दिया.

वो पल डरावना और अद्भुत था.

अब वे आज़ाद थे!

वे हँसे और रोए, वे चिल्लाए और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की.

वे नाचे-गाए, इकट्ठे हुए और एक-दूसरे से गले मिले.

उन्होंने स्वतंत्र अमेरिकियों के रूप में अपने लिए एक नए जीवन की कल्पना की.

कुछ पूर्व दासों ने अपनी पीठ पर सिर्फ अपने कपड़े लादे और वे बागान छोड़कर चले गए.

उन्हें नहीं पता था कि वे कहाँ जा रहे थे. वे अब कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र थे. यह सोच कर ही वे खुश थे.

कई लोगों ने अपने प्रियजनों की तलाश की, जिन्हें दूसरे बागानों को बेच दिया गया था.

कुछ अपने परिवारों से जाकर मिले.

कुछ को बहुत खोजने के बाद भी अपने माता-पिता या बच्चे नहीं मिले.
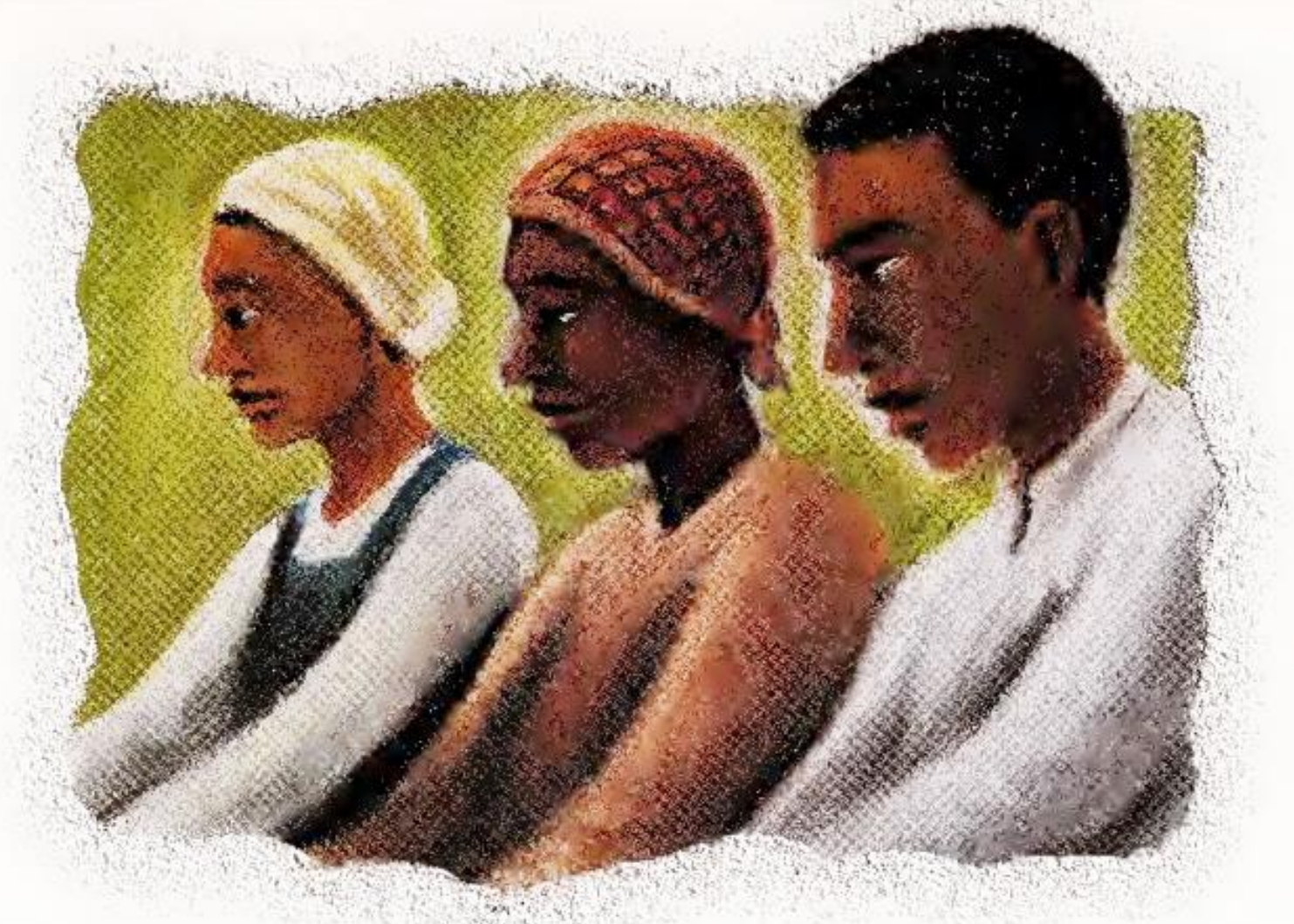
कुछ पूर्व दासों को शहरों में नौकरी मिली.

पर कई को वहां नौकरी नहीं मिली, क्योंकि गोरे लोगों ने अश्वेत लोगों को काम पर नहीं रखा.

बहुत से लोग वृक्षारोपण (प्लांटेशन) पर ही रुके रहे, क्योंकि उनके पास कहीं जाने का और कोई ठिकाना ही नहीं था.

गुलाम लोग आजाद तो हो गए थे, लेकिन फिर भी अश्वेत अमेरिकी, लंबे समय तक समान अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे.

फिर भी, गुलामी का अंत उनके लिए बहुत खुशी और जश्न मनाने का एक कारण था.
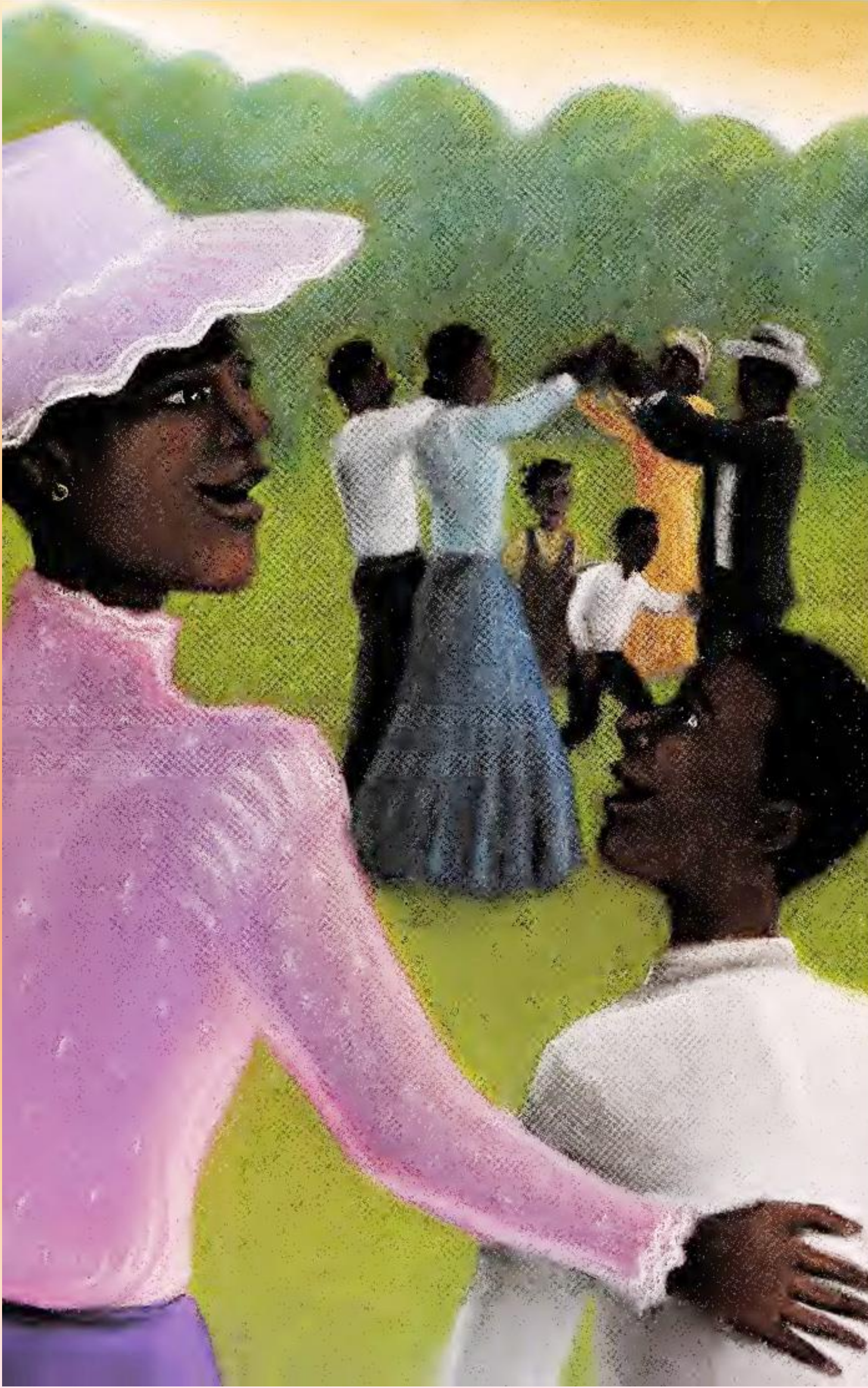
जुनेटीन्थ

19 जून, 1866 को, स्वतंत्रता के बारे में जानने के एक साल बाद, पूर्व दास जश्न मनाने के लिए एक साथ आए.

गैल्वेस्टन शहर, संगीत से जीवंत हो उठा.

भुने मांस की मीठी खुशबू से हवा महक उठी.

टेक्सस के अश्वेत लोगों ने उस दिन अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने.

वे इकट्ठे हुए और एक-दूसरे के गले मिले.

उन्होंने समाचार साझा किए और कहानियां सुनाईं.

उन्होंने स्वतंत्रता का जश्न मनाते हुए आध्यात्मिक गीत गाए.

"मेरे लिए अब कोई और गुलामी की जंजीर नहीं. और नहीं, और नहीं."

उस दिन जश्न मनाने के लिए लोगों ने समारोहों, पूजा सेवाओं और परेडों में भाग लिया.

यह टेक्सस में 19 जून के कई समारोहों में से पहला था.

जब अश्वेत टेक्सन दूसरे राज्यों में गए, तो वे उस परंपरा को अपने साथ वहां भी ले गए.

लेकिन 19 जून, आखिर जूनटीन्थ कैसे बन गया?

सबसे पहले, टेक्सस ने इसे स्वतंत्रता दिवस, मुक्ति दिवस को केवल 19 जून कहा.

जैसे-जैसे साल बीतते गए, और स्वतंत्रता की कहानियां सुनाई गईं और फिर दुबारा से सुनाई गईं, तब जून और 19 तारीख एक साथ "जूनटीन्थ" में मिल गए.
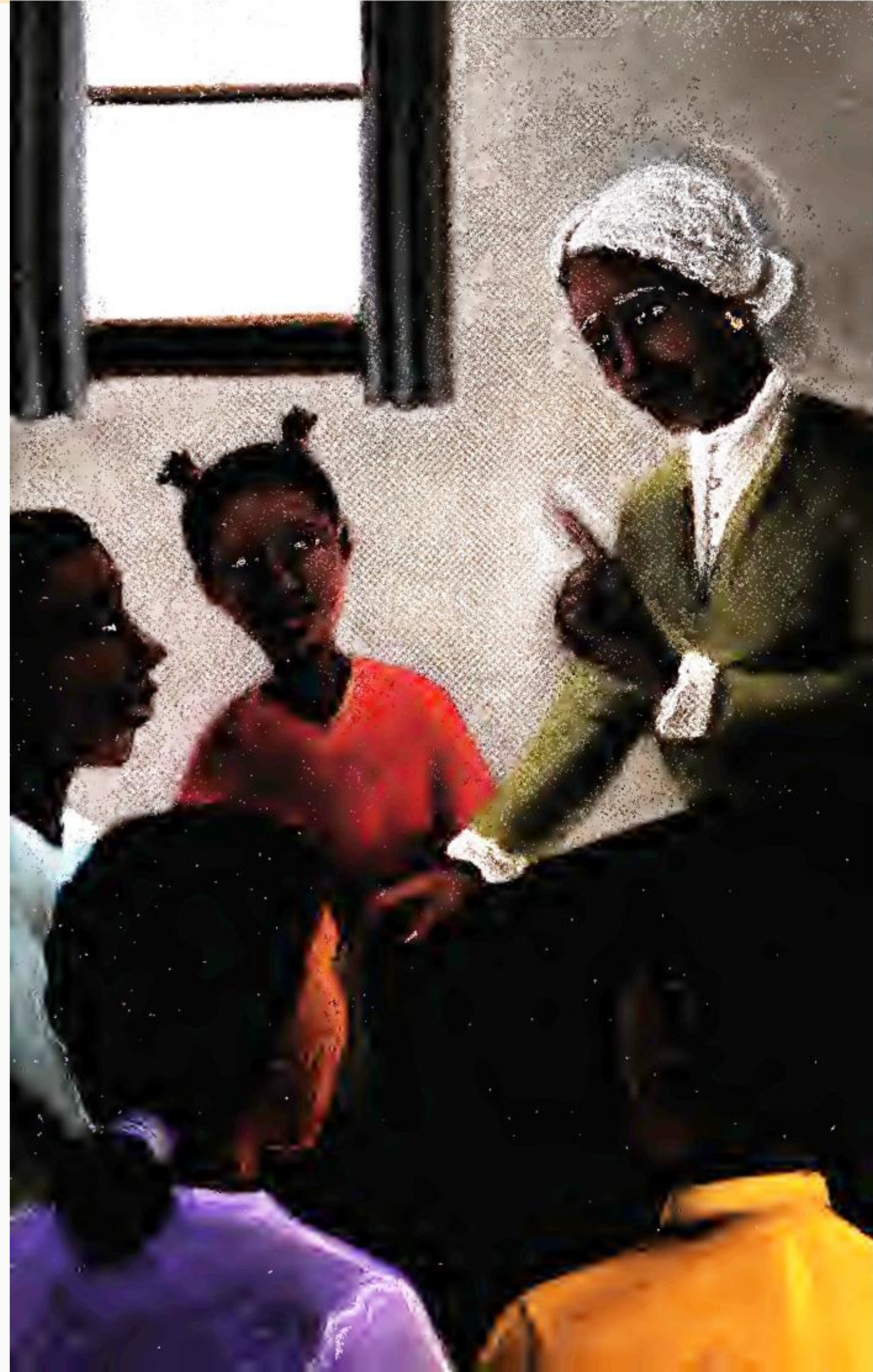
आज, जूनटीन्थ, 1866 की पहली वर्षगांठ की तरह ही मनाया जाता है.

पार्कों, चर्चों, स्कूलों में पिकनिक मनाने के लिए हर रंग के लोग पहुंचते हैं.

भुने मांस की मीठी खुशबू से, हवा महक उठती है.

आलू का सलाद, भुना मक्का, बिस्कुट, घर की बनी आइसक्रीम, केक, पाई और खरबूजे टेबल पर सजाए जाते हैं.

रेड वेलवेट केक और रेड सोडा पॉप उस दिन के पारंपरिक व्यंजन हैं.

लाल रंग, उन सभी लोगों का सम्मान करता है जिनका खून, गुलामी में और आजादी के संघर्ष में बहा था.
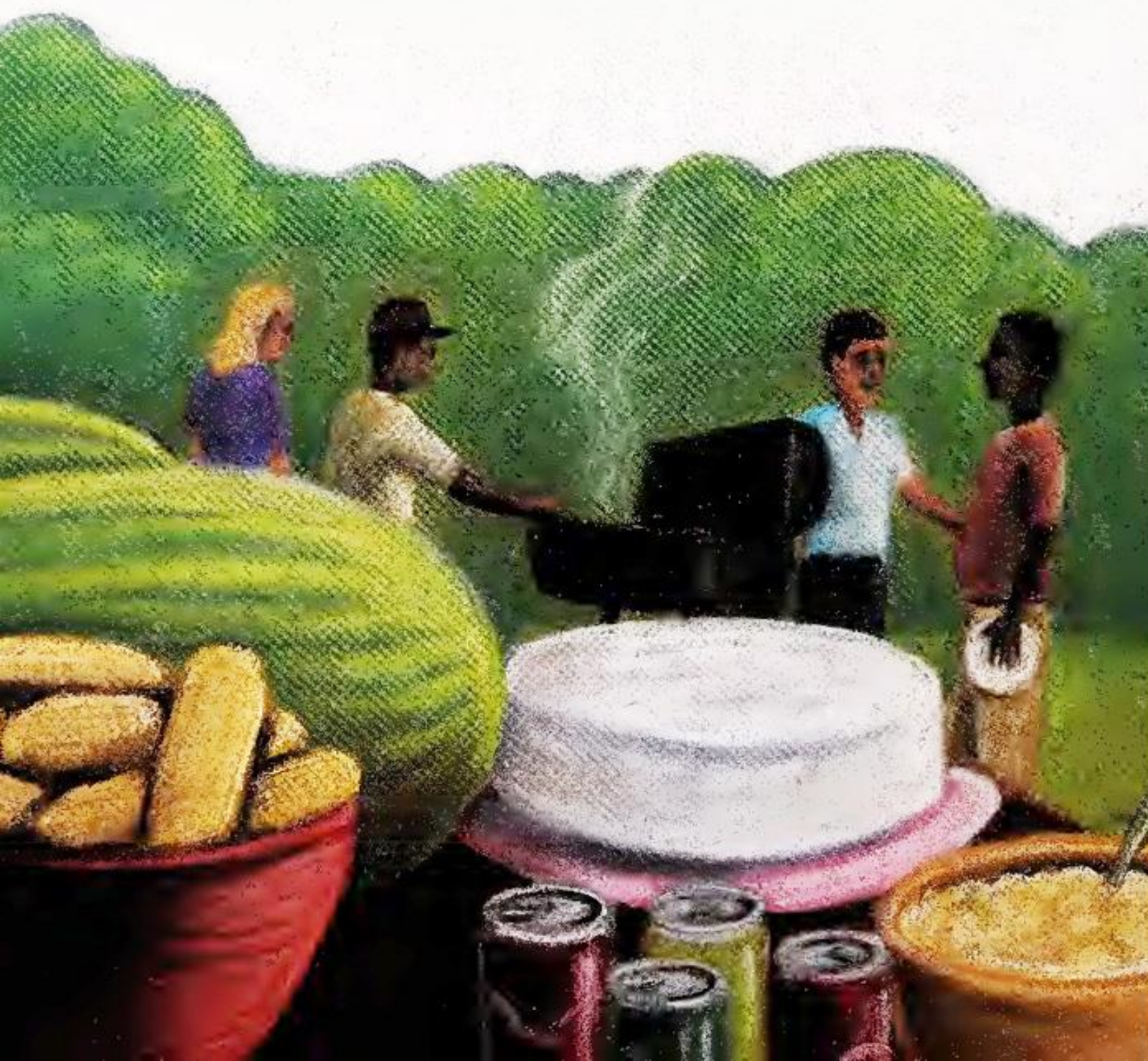
उत्सव की परेड शहर की सड़कों को संगीत और नृत्य से भर देती है.

काले काउ-बॉय और काउ-गर्ल घोड़ों पर सवार होकर शहर में से गुजरते हैं.
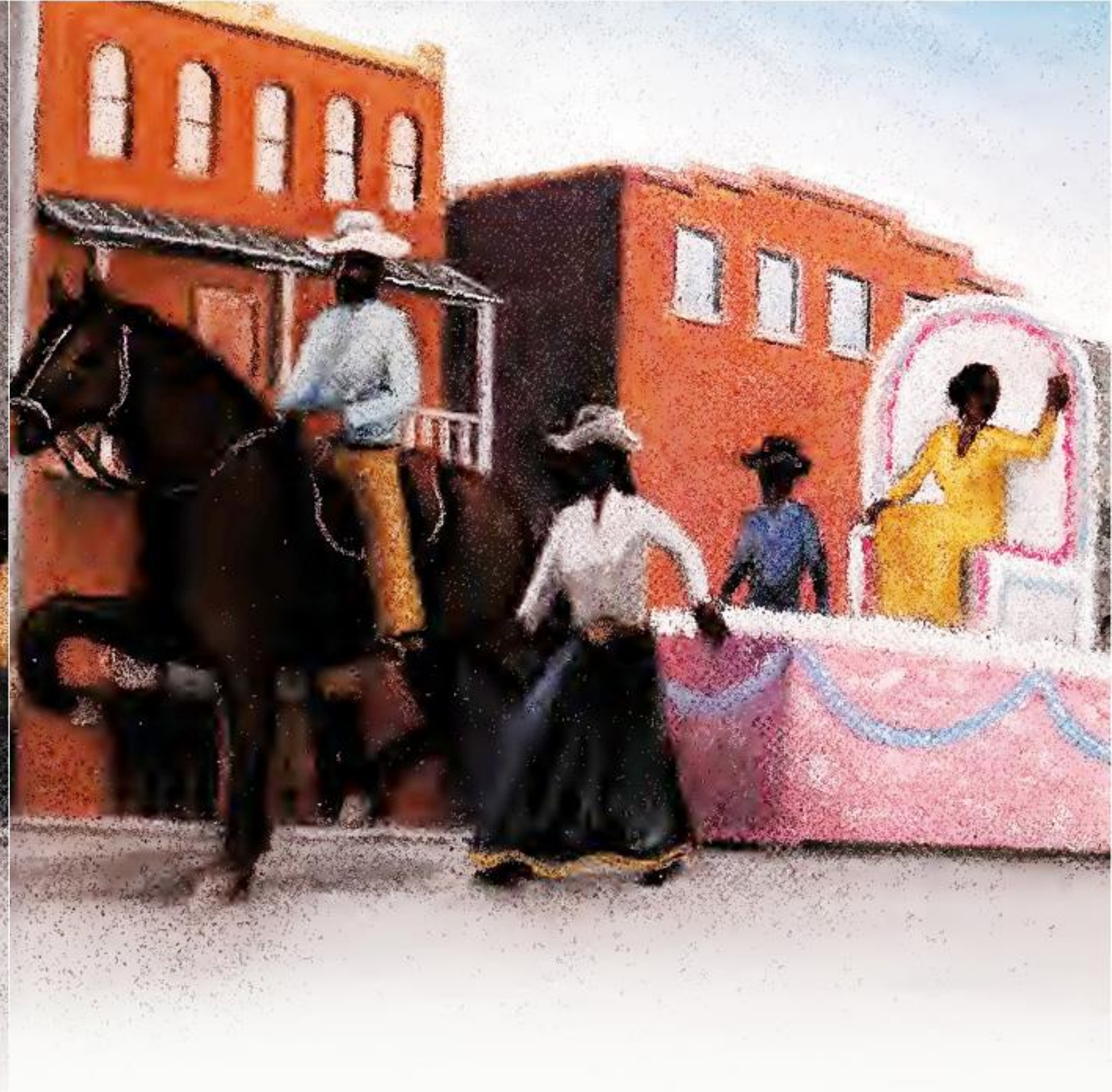
एक सजी हुई नाव पर सवार "मिस जूनटीन्थ" लोगों की ओर हाथ हिलाती है. लोग सड़कों पर टहलते हैं. वे स्वतंत्रता और देशभक्ति के गीत गाते हैं.

उत्साही बेसबॉल खिलाडी प्रशंसकों का मनोरंजन करते हैं.

तेज़ रेस, बोरी रेस, और घोड़ों पर सवार रोडीओ भी लोगों का मनोरंजन करते हैं.
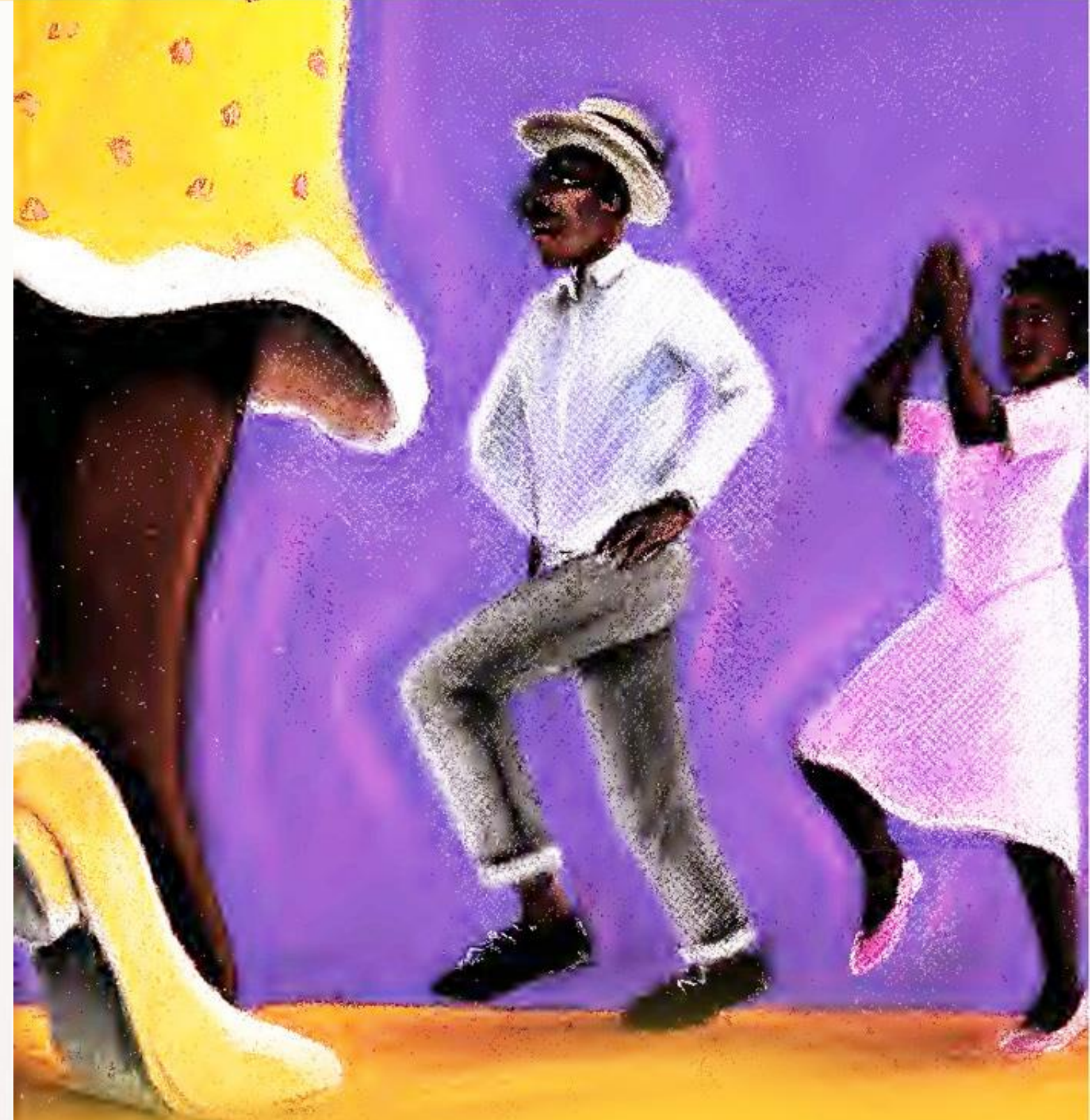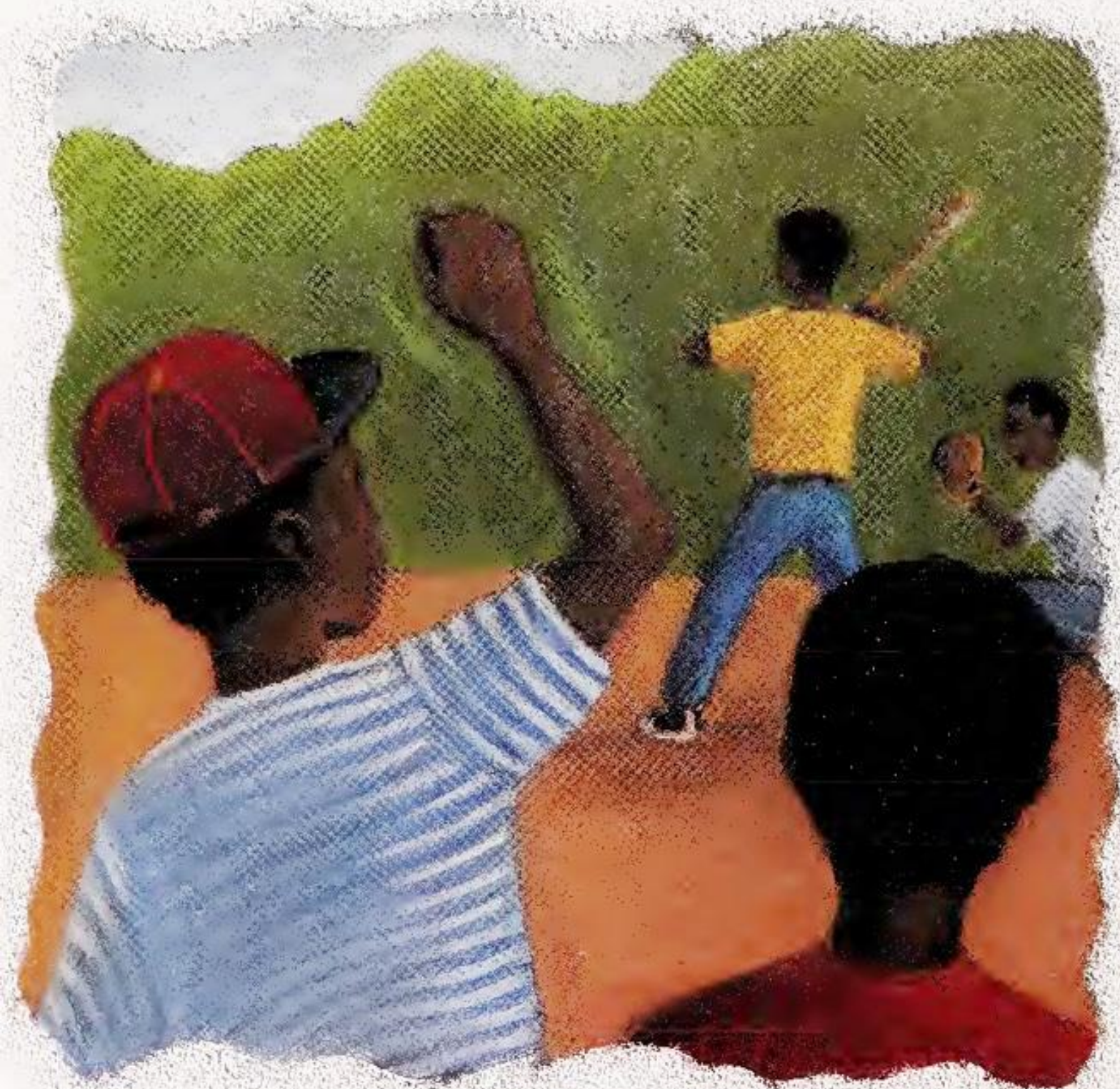
केक-वाक के दौरान, लोग ताली बजाते हैं और अपने पैर थपथपाते हैं.

नर्तक नाचते हैं और छलांगे लगाते हैं, वे सभी एक स्वादिष्ट केक का भव्य पुरस्कार जीतने के लिए स्पर्धा करते हैं.

मुक्ति उद्घोषणा की पूजा सेवाएं और वाचन जूनटीन्थ के महत्वपूर्ण भाग हैं.

वक्ता, गुलामी और आजादी की कहानियों को बार-बार सुनाते हैं.

वे किस्से सुनाते हैं कि आखिर टेक्सस के गुलामों को मुक्ति का समाचार सबसे आखिरी में क्यों मिला.

एक किंवदंती के अनुसार मुक्ति उद्घोषणा के साथ भेजे गए पहले दूत की रास्ते में ही हत्या कर दी गई थी.

और दूसरी कहानी के अनुसार उसे सवारी करने के लिए एक बहुत ही धीमा खच्चर दिया गया था.

लोग हंसते हैं, लेकिन देर से पहुँचने वाली इस महत्वपूर्ण खबर की असली वजह कोई नहीं भूलता.

कोई नहीं भूलता हैं कि जूनटीन्थ केवल मौज-मस्ती करने का दिन नहीं है.

वो पुराने दर्द को याद करने का समय भी है.
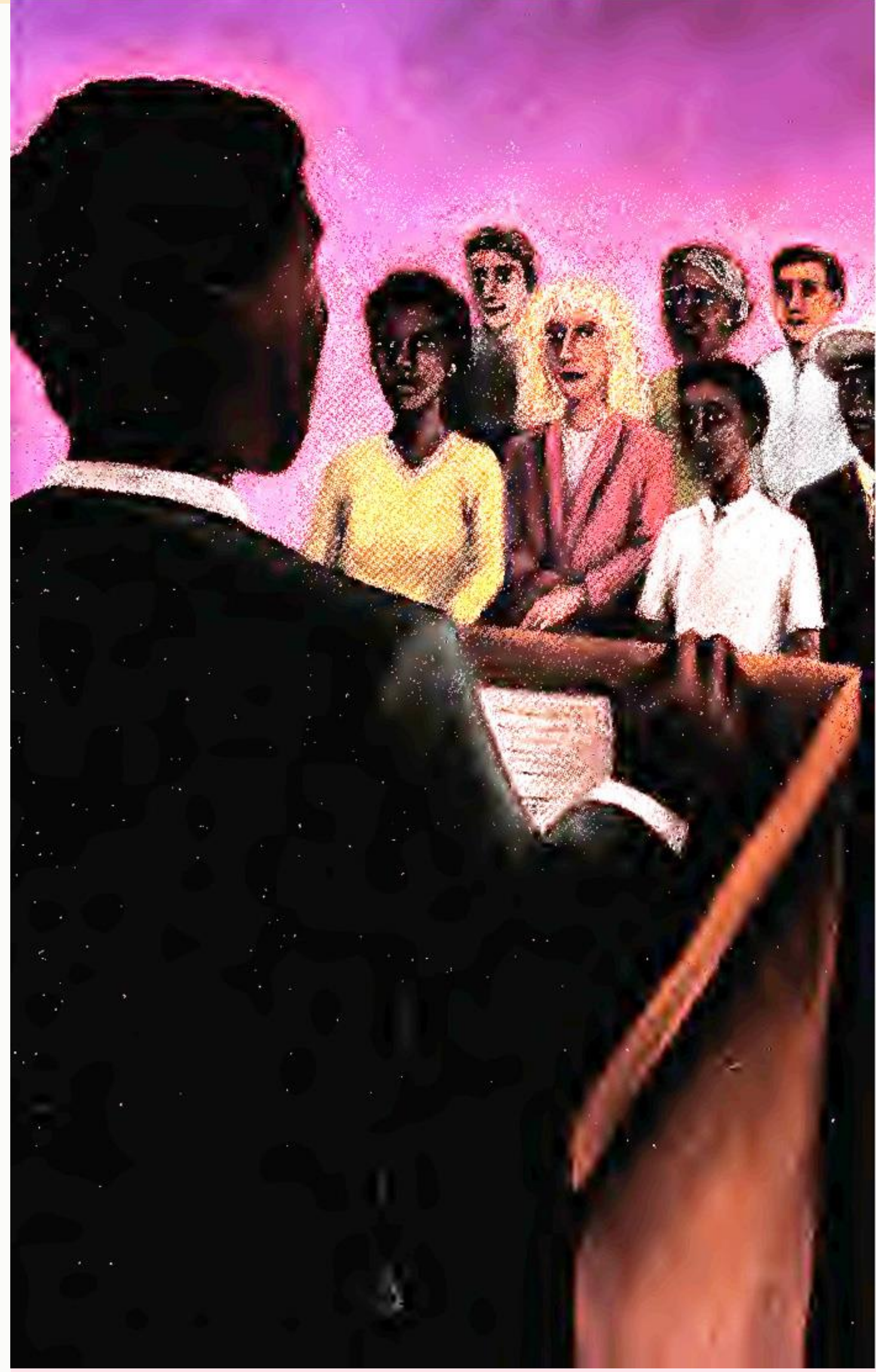
संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग हर जगह जूनटीन्थ मनाया जाता है.

टेक्सास की सरकार ने 1 जनवरी 1980 को, वो दिन राजकीय छुट्टी घोषित कर दिया.

फ्लोरिडा से अलास्का, कैलिफोर्निया से न्यू जर्सी तक, देश भर के अन्य राज्यों ने इस उदाहरण का अनुसरण किया है.

कुछ लोगों का मानना है कि 19 जून को राष्ट्रीय छुट्टी होनी चाहिए, जैसे "थैंक्सगिविंग" या जुलाई की चौथी तारीख.

जूनटीन्थ, अमेरिका में गुलामी के अंत की स्तुति गाने का समय होता है.

स्वतंत्रता दिवस

गुलामी के अंत का जश्न कब मनाया जाए, इस बारे में अमेरिकियों के अलग-अलग विचार हैं. कुछ लोग सोचते हैं कि यह 1 जनवरी होना चाहिए, जिस दिन राष्ट्रपति लिंकन ने 1863 में मुक्ति उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे. दूसरों को लगता है कि 18 दिसंबर, 1865, सच्चा दिन होगा. इस तारीख को, संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में तेरहवां संशोधन कानून बन गया. इस संशोधन ने सभी राज्यों में दास प्रथा समाप्त कर दी. मुक्ति उद्घोषणा ने केवल संघीय राज्यों में दासों को मुक्त किया. और कुछ ऐसे लोग हैं जो उस तारीख का सम्मान करते हैं जब दासों को उनके ही राज्य में मुक्त किया गया था. आप जो भी तारीख चुनें, आजादी का दिन वाकई मे जश्न मनाने वाला दिन है.